



पशुधन संकल्प

e - Magazine

Available online at
<https://psem.vitalbiotech.org>

Article ID: PS/26/10

ग्रीष्मकालीन तनाव में पशुधन की सुरक्षा: बेहतर स्वास्थ्य और उत्पादन प्रबंधन का मंत्र



डॉ. शिविका चौकसे^{1*}, डॉ. रेनू सिंह²

¹सहायक प्राध्यापक, पशु मादारोग एवं प्रसूति विभाग, ²सह-प्राध्यापक, पशु विकृति विज्ञान विभाग
 पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बांदा कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, बांदा, उ.प्र.

परिचय

गर्मियों का तनाव पशु प्रदर्शन और लाभप्रदता पर प्रभाव डालता है, फीड सेवन, पोषक तत्वों के उपयोग और उत्पादन को कम करके। गर्मी का मौसम जानवरों में उत्पादन के लिए सबसे हानिकारक है, विशेष रूप से उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्र में पाला जाता है। विदेशी डेयरी गायों को पर्यावरणीय तनाव का खतरा अधिक होता है क्योंकि उनमें चयापचय की अधिक गर्मी होती है। उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में, गर्मी के तनाव के दौरान पोषण प्रबंधन के माध्यम से जानवरों के उत्पादन को बनाए रखा जा सकता है। दूध उत्पादन में कमी और बड़े आर्थिक नुकसान के कारण डेयरी उत्पादकों के लिए गर्मी का तनाव एक प्रमुख चिंता का विषय बन गया है। हालांकि, पशुधन के लिए कल्याण के उच्च मानकों को सुनिश्चित करने के लिए, एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है जिसमें इस बात पर विचार करने का महत्व शामिल है कि गर्मी का तनाव भी नकारात्मक भावात्मक राज्यों का कारण बन सकता है और गर्मी शमन रणनीतियों को, जहां संभव हो, गायों के प्राकृतिक अनुकूलन पर विचार करना चाहिए।



लेख इतिहास

Received : 18. 08.2026
 Revised : 26. 08.2026
 Accepted : 30. 08.2026



अनुरूपी लेखक

शिविका चौकसे*

E-mail ID:
 shivichouksey23@gmail.com



Open Access

This article is published under the terms of the
[Creative Commons Attribution License 4.0.](#)

गर्मी का मौसम आते ही पशुपालक के सामने सबसे बड़ी चुनौती केवल तेज धूप नहीं होती, बल्कि उसका सीधा असर पशुओं के स्वास्थ्य, दूध उत्पादन और प्रजनन क्षमता पर भी पड़ता है। जब वातावरण का तापमान और आर्द्रता बढ़ जाती है और पशु अपने शरीर की अतिरिक्त गर्मी बाहर नहीं निकाल पाता, तब वह ऊष्मा तनाव (Heat Stress) की स्थिति में पहुँच जाता है। यह समस्या गाय, भैंस, बकरी, भेड़, घोड़े और अन्य पशुओं को प्रभावित कर सकती है। विशेष रूप से अधिक दूध देने वाले विदेशी एवं संकर नस्ल के पशु गर्मी के प्रति अपेक्षाकृत अधिक संवेदनशील होते हैं।

गर्मी बढ़ने पर पशु सबसे पहले अपने व्यवहार और खान-पान में बदलाव करता है। वह बार-बार पानी पीता है, चारा कम खाता है और छायादार स्थान खोजता है। उसकी साँस तेज चलने लगती है, शरीर का तापमान बढ़ सकता है और अत्यधिक गर्मी में पशु सुस्त, कमजोर तथा निर्जलित दिखाई देने लगता है। कई बार तेज हाँफना गर्मी के तनाव का शुरुआती संकेत होता है। यदि समय रहते ध्यान न दिया जाए तो स्थिति गंभीर हो सकती है। इसका सीधा असर पशुपालक की आय पर पड़ता है। गर्मी के कारण पशु की भूख कम होने से शरीर में जाने वाले पोषक तत्वों की मात्रा घट जाती है और दूध उत्पादन में कमी आने लगती है। वहीं, शरीर की सामान्य क्रियाओं को बनाए रखने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता बढ़ सकती है। इस प्रकार पशु कम खाता है, लेकिन शरीर को अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है कृन्तीजा होता है उत्पादन में गिरावट और पशुपालक को आर्थिक नुकसान। गर्मी की मार केवल दूध तक सीमित नहीं रहती। इसका प्रभाव पशुओं के प्रजनन पर भी पड़ता है। अत्यधिक तापमान अंडाशय में फॉलिकल के विकास और भ्रूण के विकास को प्रभावित कर सकता है। गर्भधारण की संभावना

कम हो सकती है तथा गर्भस्थ भ्रूण के विकास पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए गर्मी के मौसम में प्रजनन प्रबंधन पर विशेष ध्यान देना जरूरी है।

ऐसे समय में पशुपालक का पहला हथियार है — स्वच्छ और पर्याप्त पानी। पशुओं को दिन-रात आसानी से उपलब्ध स्वच्छ पानी मिलना चाहिए। पानी की टंकियों और नांदों को संभव हो तो छायादार स्थान पर रखें तथा उन्हें नियमित रूप से साफ करें। दुग्ध दोहन के बाद पशु को पर्याप्त पानी उपलब्ध कराना भी उपयोगी है। बड़े झुंड में पानी के पर्याप्त स्थान होने चाहिए, ताकि कमजोर या छोटे पशु भी आसानी से पानी पी सकें। दूसरा महत्वपूर्ण उपाय है कृच्छायादार और हवादार आवास। पशुशाला ऐसी होनी चाहिए जिसमें हवा का प्राकृतिक आवागमन बना रहे और सीधी धूप पशुओं तक कम पहुँचे। छत की ऊँचाई और बनावट, वेंटिलेशन तथा छायांकन पर ध्यान देना चाहिए। छत पर सफेद रंग या गर्मी कम करने वाली उपयुक्त व्यवस्था भी मददगार हो सकती है। गर्मी में भोजन देने का समय भी बदलना लाभकारी हो सकता है। दिन के अपेक्षाकृत ठंडे समय, विशेषकर सुबह और शाम, पशुओं को अधिक मात्रा में आहार दिया जा सकता है। पर्याप्त खनिज, उचित पोषण तथा संतुलित आहार बनाए रखना जरूरी है। गर्मी के दौरान पशु की कम होती भूख को देखते हुए आहार प्रबंधन में आवश्यक बदलाव पशु की उत्पादन क्षमता बनाए रखने में मदद कर सकते हैं। जब केवल छाया पर्याप्त न हो, तब पंखे, पानी के छिड़काव और स्प्रिंकलर का सहारा लिया जा सकता है। पंखे से हवा का प्रवाह बढ़ता है और पानी के छिड़काव से शरीर से गर्मी निकलने में सहायता मिलती है। गर्म और शुष्क मौसम में मिस्टिंग या फॉगिंग जैसी व्यवस्थाएँ भी उपयोगी हो सकती हैं, लेकिन अधिक आर्द्र वातावरण में इनका उपयोग सावधानी से करना चाहिए,



क्योंकि इससे वातावरण की नमी और बढ़ सकती है। भैंसों के लिए उचित परिस्थितियों में पानी में बैठना या नहाना भी गर्मी से राहत देने में सहायक हो सकता है।

प्रजनन संबंधी मामलों में भी गर्मी के मौसम में अतिरिक्त सावधानी आवश्यक है। पशुओं में हीट के लक्षणों पर नियमित नजर रखें और कृत्रिम गर्भाधान का समय संभव हो तो दिन के ठंडे समय में रखें। गर्भाधान के बाद शुरुआती दिनों में पशु को अत्यधिक गर्मी से बचाना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। भैंसों में गर्मी के मौसम में हीट के लक्षण अपेक्षाकृत कम स्पष्ट दिखाई दे सकते हैं, इसलिए उनका नियमित और सावधानीपूर्वक निरीक्षण करना चाहिए। यदि पशु बहुत तेजी से हाँफ रहा हो, अत्यधिक सुस्त हो, लड़खड़ा रहा हो, शरीर का तापमान बढ़ा हुआ हो या अचानक गिर जाए,

तो इसे सामान्य गर्मी समझकर नजरअंदाज न करें। ऐसे पशु को तुरंत छायादार एवं ठंडे स्थान पर ले जाएँ, शरीर को ठंडे पानी से ठंडा करें, पंखे की हवा दें और शीघ्र पशु चिकित्सक से संपर्क करें। गर्मी से बचाव का सबसे अच्छा उपाय संकट आने के बाद उपचार करना नहीं, बल्कि पहले से तैयारी करना है। पर्याप्त पानी, छाया, हवादार पशुशाला, संतुलित आहार, उचित शीतलन और सावधानीपूर्वक प्रजनन प्रबंधनकृद्न सभी उपायों को मिलाकर ही पशुओं को गर्मी के तनाव से प्रभावी ढंग से बचाया जा सकता है। स्वस्थ और आरामदायक पशु ही बेहतर दूध देगा, अच्छी प्रजनन क्षमता बनाए रखेगा और पशुपालक की आय को सुरक्षित रखने में मदद करेगा। इसलिए इस गर्मी में एक बात गांठ बाँध लेंकृपशु को गर्मी से राहत दें, उत्पादन और मुनाफे को सुरक्षित रखें।

